सत्यकाम! सत्यसंकल्प!!

अ

मारग विहंग बतावैं

सन्तजन

आचार्य स्वतन्त्रदेव

Scanned with CamScanner

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृ०-सं०
१- मारग विहंग बतावैं संतजन	11
२- कौने घर से जीव की उत्पति कौने घर को जावै	16
३- जहाँ जाय जिव बहुरि न लौटे सो सुर तहाँ चढ़ावै	18
४- गढ़ सुमेर वाही को कहिये, सुई नखर से जावै	20
५- भूमण्डल से परिचय करि ले पर्वत धौल लखावै	24
६- द्वादस कोस साहिब का डेरा तहाँ सुरत ढहरावै	29
७- वाको रंग रूप नहिं रेखा, कौन पुरुष गुन गावै	31
८- कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जो यह पद लखि आवै	35
९-अमर लोक में झुलै हिंडोला, सतगुरु सबद सुनावै	36
१०-उपसंहार	38
११-सन्त-समाज के नियम	43
१२-संस्थान के सद्ग्रन्थों की सूची	44

Scanned with CamScanner

मारग विहंग बतावें सन्तजन

मार्ग का अर्थ है रास्ता, जिस पर चलकर यात्री अपने निर्दिष्ट गन्तव्य स्थान तक पहुँच जाता है। संसार में रहने वाले लोगों के भिन्न-भिन्न लक्ष्य होते हैं, जिसकी प्राप्ति के निमित्त वे वैसे मार्ग पर अनुगमन करते हैं, जिससे वे निर्विघ्न अपने पूर्व निश्चित स्थान पर पहुँच जायँ। अध्यात्म जगत् का एकमात्र लक्ष्य है, सारे मानव-समाज को जीवनकाल में ही प्रभु की प्राप्ति, प्रभु का साक्षात्कार करना। इस लक्ष्य तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग अर्थात् साधन है-- विहंगम योग की क्रियात्मक साधना, जो चेतन है। चूँकि परमात्मा चेतन है, अतः परमात्मा की प्राप्ति किसी भी प्राकृतिक साधन से सम्भव नहीं है। अतः जो भी साधन, जो भी उपाय, इन्द्रिय, प्राण, अन्तःकरण, अष्टचक्र, नौ द्वार के माध्यम से किया जाता है, वह साधक को प्रकृति-मण्डल के अन्तर्गत एक सीमा के अन्दर ही पहुँचाता है। परमात्मा प्रकृतिपार है। अतः उसके साक्षात्कार करने के

Scanned with CamScanner

लिए केवल एक ही साधन, चेतन साधन है, जो इन्द्रिय, प्राण, अन्तःकरण, अष्टचक्र, नौ द्वार से पृथक् होकर आत्मा द्वारा ही किया जाता है। इसी विहंगम मार्ग को प्राचीन वाङ्मय में ब्रह्मविद्या, पराविद्या, मधुविद्या, सहज योग, शब्द-सुरति योग, देवयानपथ, अध्यात्मविद्या भी कहा गया है। यह विद्या कोई पुस्तकीय विद्या नहीं है, जिसे हम मन, बुद्धि, वाणी के आधार पर सीखते और पढ़कर प्राप्त करते हैं। यह विद्या एक चेतन वैज्ञानिक पद्धति है, जो परमात्मा की तरह ही नित्य अनादि है और इसके उपदेष्टा, विश्व-शिक्षक भी नित्य अनादि सद्‌गुरु हैं। नित्य अनादि सद्‌गुरु का ही ज्ञान ग्रहण कर स्वयंसिद्ध, अभ्याससिद्ध तथा परम्परा सद्‌गुरु इस धरती पर आकर, जगजीवों को परमात्मा-प्राप्ति के इस साधन का उपदेश करते हैं। इस प्रकार के सद्‌गुरु पूरे विश्व में एक कालखण्ड में एक ही होते हैं। विहंगम योग इसे इसलिए कहा गया है कि प्रकृति-आधार त्यागकर शुद्ध आत्मिक चेतना से इसका साधन, अभ्यास किया जाता है। जैसे पक्षी बिना किसी ठोस आधार का सहारा लिये अपने पंखों पर उड़कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक चला जाता है, उसी प्रकार आत्मा मन, बुद्धि, इन्द्रिय, प्राणादि जड़ करणों का परित्याग कर अपनी चेतन शक्ति सुरति से परमात्मा का साक्षात्कार करता है। विहंगम मार्ग को ही मीनमार्ग भी कहा गया है, क्योंकि मछली जल-प्रवाह के प्रतिकूल चलते

Scanned with CamScanner

हुए, अपने लक्ष्य तक पहुँच जाती है। उसी प्रकार आत्मा प्रकृति के अर्द्ध-प्रवाह के विपरीत दिशा में गमन कर ऊर्ध्व चेतन-मण्डल में परमात्मा को प्राप्तकर आनन्दमग्न होता है। विहंगम और मीन के लिए कोई मार्ग बना नहीं रहता, जबकि अन्य प्राणियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए किसी-न-किसी ठोस आधार की आवश्यकता होती है। चींटी से हाथी तक के जानवर को पृथ्वी स्थित किसी जड़ आधार का सहारा लेना पड़ता है।

पिपिल, कपिल, विहंगम– इन तीन मार्गों की चर्चा प्राचीन वाङ्मय में आती है। पिपिल कहते हैं चींटी को, जो किसी-न-किसी ठोस आधार से चलती है। कपिल का अर्थ बन्दर है, जो एक डाल से कूदकर वृक्ष की दूसरी डाल पर जा बैठता है। प्राकृतिक सारे पूजा-पाठ, जप-तप, यज्ञ, तीर्थ, व्रत, दान आदि पिपिल मार्ग के अन्तर्गत आते हैं। ये सभी शुभ कर्म हैं। इनके शुभ फल को भोगने के लिए जीव को पुनः शरीर धारण करना पड़ता है। इनसे प्रभु की प्राप्ति नहीं होती। इन शुभ कर्मों को करना चाहिए, यह समझकर कि इन कर्मों के अच्छे फल हमें मिलेंगे। इन शुभ कर्मों का ही फल है कि जीवन में सद्‌गुरु की प्राप्ति होती है और उनके द्वारा विहंगम योग की साधना का रहस्य मिलता है। इसके नियमित अभ्यास को सद्‌गुरु-शरण में रहकर करने से जीवनकाल में

Scanned with CamScanner

ही प्रभु का प्रत्यक्ष साक्षात्कार होता है और मानव-जीवन कृतकृत्य हो जाता है।

राज़योग, हठयोग, तन्त्रयोग, मंत्रयोग, प्राणायाम, आदि आधुनिक योग की प्रक्रिया कपिल मार्ग के अन्दर आती हैं। इससे भी प्राकृतिक लाभ होता है। इनमें कुछ से शारीरिक, कुछ से मानसिक, कुछ से बौद्धिक लाभ मिलता है, आत्मिक लाभ नहीं। कपिल मार्गगामी साधकों को पृथक्-पृथक् साधना, एक के बाद अन्य करनी पड़ती है। कपिल मार्ग के साधकों को कुछ प्राकृतिक चमत्कार, विभूति की भी उपलब्धि हो सकती है, होती है परन्तु परमात्मा की प्राप्ति नहीं। ब्रह्मविद्या विहंगम योग ही एकमात्र चेतन विज्ञान है, जिसकी क्रियात्मक साधना सन्तजन से सीखी जाती है। यहाँ सन्त का अर्थ साधारण साधु, महात्मा, योगी, फकीर, तान्त्रिक, मान्त्रिक, यति, सती, संन्यासी नहीं है, प्रत्युत सन्त का अर्थ है, सद्‌गुरु। सन्त शब्द का उल्लेख चारों वेदों में आया है और यह नित्य अनादि सद्‌गुरु के लिए ही आया है। अनेक विद्वानों का मत है कि सन्त शब्द अर्वाचीन है और सन्तमत साहेब कबीर के समय उनके द्वारा स्थापति है। दर असल सन्तमत के संस्थापक तो साहेब कबीर ही हैं, परन्तु यह नित्य अनादि मत है और साहेब भी नित्य अनादि सद्‌गुरु ही रहे हैं, जो चारों युगों में प्रकट होते रहते हैं। सन्तमत और सन्त शब्द की प्राचीनता की खोज कर हमारे पितर पितामह अनन्त श्री सद्‌गुरु सदाफलदेव जी महाराज ने 'चुतर्वेदीय ब्रह्मविद्या भाष्य' के द्वारा आज अध्यात्म

जगत् के सामने रख दिया है। अथर्ववेद में सन्त शब्द नित्य अनादि सद्गुरु के लिए आया है, जो इस प्रकार है--

'अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।।

अथर्ववेद- १०/४/८/३२।।

अर्थात् वे सन्त समीप ही हैं, उनको कोई देखता नहीं है, उनको कोई त्याग नहीं सकता। उन देव के ऐश्वर्य को देखो। वे न वृद्ध होते हैं और न मरते हैं।

ऋग्वेद में इसी प्रकार सन्त शब्द नित्य अनादि सद्गुरु के लिए इस प्रकार आया है--

वनेम तद्धोत्रया चितन्त्या वनेम रयिं
रयिवः सुवीर्य्यम् रण्वम् सन्तं सुवीर्य्यम्।।

—ऋग्वेद

अतः विहंगम मार्ग अर्थात् ब्रह्मविद्या विहंगम योग का उपदेश करने वाले सन्तजन, यानि नित्य अनादि, स्वयंसिद्ध, अभ्याससिद्ध और परम्परा सद्गुरु हैं। इनके अतिरिक्त अन्य कोई भी साधु, महात्मा, योगी, संन्यासी आदि नहीं तथा विहंगम योग के अतिरिक्त अन्य कोई भी योग, उपाय परमात्मा-प्राप्ति का साधन नहीं है।

Scanned with CamScanner

कौन घर से जीव की उतपति कौने घर को जावै

जीव, जीवात्मा, आत्मा, सोल, (Soul), रूह (Sprit) ये सारे शब्द पर्याय हैं। इनसे उस अणु, चेतन, एकदेशीय सत्ता का बोध होता है जो प्रत्येक देहधारी में पृथक्-पृथक् रहता है। संख्या में आत्माएँ अनन्त हैं। आत्मा शरीरस्थ दस इन्द्रिय, चतुष्टय अन्तःकरण, दस प्राणों के माध्यम से जो कुछ भी चेष्टा करता है, वे सभी कर्म हैं। कर्म के दो भेद हैं-- शुभ तथा अशुभ। इन दोनों प्रकार के कर्मों के फलों को भोगने के लिए आत्मा को बार-बार शरीर धारण करना पड़ता है और बार-बार मरना पड़ता है। 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।' श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने अपना यह मत प्रकट किया है। 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः' अर्थात् जन्म लेने वाले को अवश्य मरना पड़ता है। यह उक्ति भी श्रीमद्भगवद्गीता की ही है। जीव चूँकि चेतन, कूटस्थ सत्ता है। अतः उसकी उत्पत्ति अथवा विनाश नहीं होता है। जीव की उत्पत्ति

Scanned with CamScanner

किस घर से हुई है? इस कथन का भाव यह नहीं है कि जीव किसी घर से अथवा स्थान विशेष से उत्पन्न होता है और नष्ट हो जाता है। चेतन सत्ता का होना और न होना अर्थात् उत्पन्न होना और नष्ट होना सम्भव नहीं है। यदि ऐसा होने लगे तो फिर चेतन का मौलिक गुण जो नित्य अनादि स्थिति के रूप में है, वह समाप्त हो जायेगा। अतः आत्माएँ कहीं से यानि किसी स्थान विशेष से चलकर किसी अन्य विशेष स्थान पर पहुँचती हैं और वह स्थान विशेष जहाँ से आत्माएँ चलती हैं, उसे ही अमरलोक, महाप्रभु का परम चेतन महामण्डल परमात्मा के ही तीन चौथाई भाग, त्रिपाद ऊर्ध्व प्रदेश कहा गया है। वहाँ पर जीव मुक्तावस्था में रहते हैं। सदैव परमात्मा के चेतन आधार पर स्थित रहने के कारण परमात्मा के सारे दिव्य गुण, ऐश्वर्य, ज्ञान जीव के अन्दर लौह-अग्नि न्याय से विद्यमान रहते हैं। जैसे लोहे के एक छोटे टुकड़े को अग्नि में डाल देने से अग्नि के सारे गुण उस लौह-खण्ड में आ जाते हैं। लौह-खण्ड अग्निवत् दिख पड़ता है, परन्तु वह अग्नि नहीं बन जाता। उसे अग्नि से बाहर निकाल दिया जाय, तो पुनः वह लोहा का लोहा ही रह जाता है। उसी प्रकार आत्मा विदेह मुक्तावस्था में अमरलोक में परमात्मा के अन्दर ही स्थित रहता है और परमात्मा के सारे दिव्य गुण उसमें परिलक्षित होते हैं। अपनी अल्पज्ञता के वशीभूत होकर, यदि आत्मा यह समझने लगे कि ये सारे असीम, अनन्त दिव्यगुण मेरे अपने हैं, अर्थात् मैं ही परमात्मा हूँ, ब्रह्म हूँ, अहं ब्रह्मास्मि का भाव जाग्रत हो जाता है, तो जीव उस चेतन घर से अर्धमुख पतन को प्राप्त कर क्रमशः कैवल्य, महाकारण, कारण, सूक्ष्म और स्थूल

शरीर में आकर मृत्युलोक, इस संसार में आ जाता है। फिर वह अपने अज्ञान और जड़-चेतन तथा विविध कर्मों की ग्रन्थि से बँध जाता है। बार-बार कर्म करके और बार-बार उनके फलों को भोगने के निमित्त शरीर धारण कर तथा बार-बार मृत्यु को प्राप्तकर असीम दुःखों को भोगता है। इसी स्थिति को प्रश्न के रूप में यहाँ पूछा गया है कि जीव किस घर से उत्पन्न होकर अर्थात् चलकर किस घर में जा पहुँचता है? इस रहस्यमय ज्ञान का अनुभव प्रत्यक्ष रूप से सद्गुरु-शरण में रहकर विहंगम योग की साधना के द्वारा प्राप्त होता है और सिद्धान्ततः इसका ज्ञान आर्ष ग्रन्थों अथवा संत-साहित्य के अनुशीलन से होता है।

जहाँ जाय जिव बहुरि न लौटे सो सुर तहाँ चढ़ावै

जब जीव अमरलोक से पतनोन्मुख होकर इस मृत्यलोक संसार में आ जाता है, तब अनेक कष्ट-परितापों का अनुभव करता रहता है। ईश्वर-कृपा से यदि उसे सद्गुरु की प्राप्ति हो जाती है और जब विहंगम योग की साधना सद्गुरु-शरण में रहकर वह

चिरकाल-पर्यन्त करता है, तब पुनः वह विलोम गति से क्रमशः स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण और कैवल्य शरीरों का त्याग कर अपने शुद्ध चेतन स्वरूप के द्वारा पुनः उसी अमरलोक में पहुँच कर आनन्द का उपभोग करता है। अब वहाँ से जीव का पुनः पतन होने का भय नहीं रहता, यदि वह पूर्व संकल्प से प्रभु में जल-मीनवत् भक्ति की इच्छा करता है। मुक्ति में इस प्रकार का कोई पूर्व संकल्प नहीं होता। अतः जीव को अमरलोक से पुनः गिरने की सम्भावना रहती है, जैसा कि यहाँ बतलाया गया है, परन्तु जब जीव पहले ही यह जान लेता अथवा समझकर दृढ़ निश्चय कर लेता है कि मुझे भक्ति चाहिए, तब उसका सम्बन्ध परमात्मा के साथ जल-मीनवत् प्रेम के रूप में बना रहता है। वह निमिषमात्र के लिये भी प्रभु से पृथक् होना, उसी प्रकार नहीं चाहता है, जिस प्रकार मछली जल से पृथक् होना कदापि नहीं चाहती। अतः भक्ति को सभी सन्त-महात्माओं ने मुक्ति से श्रेष्ठ समझा है और उन्होंने भक्ति की ही माँग की है, मुक्ति की नहीं। परमाराध्य अनन्त श्री सद्गुरु सदाफलदेव जी महाराज ने भी भक्ति की ही माँग की है, मुक्ति अथवा सांसारिक मान-प्रतिष्ठा की नहीं--

मुक्ति भुक्ति क्या लेऊँगा, क्या माँगूँ जगमान।
शरण शरण मैं शरण हूँ, भक्ति दया करु दान।।

मुक्ति सदा मनभावनी, हंस विभो विज्ञान।
तदपि मिले मोहि भक्तिवर, मीन नीर जिमि प्रान।।

अतः सद्गुरु ही सम्पूर्ण विश्व में एक ऐसे महापुरुष हैं, जो शरणागत अध्यात्म-पिपासुओं को मायालोक छुड़ाकर चेतन अमरलोक में निवास करा देते हैं। उनके पास मुक्ति और भक्ति दोनों रहती है और अपने भक्त-शिष्यों को उनकी माँग के अनुसार दोनों में से जो भी वह चाहता है, उसे दे देते हैं, परन्तु उसे भक्ति की माँग करने पर जोर देकर उसे अमरलोक में पहुँचा देते हैं, जहाँ से पुनः उसे मृत्युलोक, इस संसार में आना नहीं पड़ता। सद्गुरु सम्पूर्ण विश्व में एक अद्वितीय महापुरुष होते हैं--

मायालोक छोड़ायकर, चेतनलोक निवास।
सद्गुरु ताको जानिये, भक्ति मुक्ति तेहि पास।।

—स्वर्वेद।

गढ़ सुमेर वाहि को कहिये सूई नखा से जावै

सुमेर नामक एक उच्च पर्वत हिमगिरि पर्वतमाला के अन्तर्गत स्थित है। उस पर चढ़ना और उसके शिखर पर पहुँचने का दुरूह, टेढ़ा-मेढ़ा मार्ग है। उस पर चढ़ने में बड़े श्रम और धैर्य की आवश्यकता है। यहाँ पर साहेब कबीर अमरलोक

का उदाहरण सुमेर स्थित एक गढ़ से कर रहे हैं। अमरलोक ऊर्ध्व चेतन-मण्डल में स्थित है। वहाँ पर पहुँचने का कोई प्राकृतिक ठोस मार्ग नहीं है। वहाँ इन्द्रिय, मन, बुद्धि, प्राणों तथा परा, पश्यन्ति, मध्यमा एवं बैखरी वाणी की पहुँच नहीं है। सारशब्द, सत्यनाम, परमपुरुष, सर्वाधार है और स्वयं निराधार है। वह सर्वव्यापक है। उसका कोई ठोस प्राकृतिक आधार नहीं है, जिस पर वह टिका है। अक्षर भूमि के पार वह परम अक्षर महाप्रभु का दिव्य, अमृत, महाचेतन-मण्डल है। अक्षर और परम अक्षर परमप्रभु के बीच एक सूक्ष्म चेतन द्वार है, उसे ही सन्त-साहित्य, स्वर्वेद, कठोपनिषद् में 'एकादश द्वार' कहा गया है। दशम द्वार प्रकृति में है। उससे परे अक्षर चेतन-मण्डल है। अक्षर के ऊपरी सतह पर वह चेतन एकादश द्वार सूई के छिद्र के सदृश, यानि अति सूक्ष्म है। उसी द्वार में जाने के लिए सुरति, आत्म-चेतना अधिक सूक्ष्म होकर निरति बन जाती है और परमपुरुष परमात्मा के चेतन-मण्डल में प्रविष्ट होकर परमात्मा का साक्षात्कार करती है। उस स्थिति में आत्मा के अन्दर उसी द्वार से परम पुरुष की अमृतधार स्रवित होकर गिरती है और उस दिव्य सोमरस का पान कर आत्मा की जन्म-जन्मान्तर की तृषा शान्त हो जाती है। इस स्थिति को जीवनकाल में प्राप्त जीवन्मुक्त विहंगम योगी संसार के सारे कर्मों को करता हुआ भी कर्मफल से निर्लिप्त रहता है। उसके कर्म बन्धन के कारण नहीं होते। वह श्वाँस लेकर भी श्वाँस नहीं लेता, देखकर भी नहीं देखता, सुनकर भी नहीं सुनता, सूँघकर

Scanned with CamScanner

भी नहीं सूँघता। अन्य सारे कर्मों को करता हुआ भी कुछ नहीं करता। उसके सारे कर्म 'अकर्म' हो जाते हैं, यानि नहीं कर्म करने के सदृश हो जाते हैं। ऐसे जीवन्मुक्त विहंगम योगी संसार में सर्वमान्य, सर्वपूज्य हैं। इस प्रकार की स्थिति सद्गुरु-शरण में रहकर, चिरकाल तक विहंगम योग की चेतन साधना करने से ही प्राप्त होती है। इसके लिए सारी धरती पर कोई अन्य युक्ति, साधना, पूजा-पाठ, जप-तप, योग नहीं है, क्योंकि एकमात्र विहंगम योग ही चेतन विज्ञान है। जिसके द्वारा आत्मा परम चेतन परमात्मा को प्राप्तकर इस दुर्लभ स्थिति को प्राप्त करती है। यह किसी अन्ध-विश्वास पर टिका हुआ साधन नहीं है, प्रत्युत एक वैज्ञानिक चेतन प्रणाली है। जिसका अभ्यास करने से साधक को क्रमशः प्रत्यक्षानुभूति होती रहती है कि वह किस प्रकार प्रकृति के घेरे से ऊपर उठकर, प्रकृतिपार चेतन महामण्डल में अपनी आत्म-चेतना सुरति को ऊर्ध्वमुख प्रेषित कर रहा है। इसी एकादश द्वार को स्वर्वेद में शब्दद्वार भी कहा गया है। इसे ही गगनद्वार, सुरतिद्वार, एकादश खिड़की भी स्वर्वेद एवं साहेब कबीर की अमृत पदावली में कहा गया है। यथा--

नव द्वार संसार का, दशवाँ योगी तार।
एकादश खिरकी बनी, शब्द महल मुख सार।।

ग्यारहवाँ इक द्वार है, गुप्त न जाने कोय।
सुरति द्वार निरति बने, पैठे बिरला कोय।।

Scanned with CamScanner

गगन द्वार सब पार है, जाने भेदिक सन्त।
जग अँधियारा मिट गया, पाया प्यारा कन्त।।

शब्द द्वार गुरु युक्ति से, ज्ञान दृष्टि में आय।
नहिं वहँ मन अरु पवन है, निरति निरन्तर जांय।।

--स्वर्वेद।।

कठोपनिषद् में इस एकादश द्वार का वर्णन आचार्य यम ने जिज्ञासु नचिकेता के समक्ष इस प्रकार किया है--

पुरमेकादशद्वारमजस्यावक्रचेतसः।
अनुष्ठाय न शोचति विमुक्तश्च विमुच्यते। एतद्वैतद्।।

कठो०५।१।।

इसी को साहेब कबीर खिड़की कहते हैं। यथा--

आठ मरातिब नव दरवाजा, दसवें लगी किवरिया।
खिरकी चढ़ि गोरी चितवन लागी, ऊपर झाँप झोपरिया।

यहाँ गोरी का अर्थ है, श्वेत प्रकाशमय आत्म-चेतना, सुरति जो इसी एकादश खिड़की से निरतिरूप होकर प्रविष्टकर परमपुरुष का दर्शन करती है। आज सम्पूर्ण विश्व के वेदवेत्ता, उपनिषद् साहित्य के ज्ञाता तथा अध्यात्म-क्षेत्र के शीर्ष पुरुषों से यह प्रश्न है कि यह एकादश द्वार कौन है जिसकी चर्चा यहाँ पर इस प्रकार से की गई है? इस भेदिकज्ञान को जाननेवाला

Scanned with CamScanner

सद्गुरु-शरणागत विहंगम योग के शिष्य-साधक के अतिरिक्त सम्पूर्ण विश्व में अन्य कोई भी योगी, सन्त, महन्त, साधु, संन्यासी, दण्डी, त्रिदण्डी, तान्त्रिक, मान्त्रिक, पीर, फकीर नहीं है। अतः सर्व अभिमान का परित्याग कर पूर्णरूपेण परमात्मा की प्राप्ति और जीवन में परमानन्द एवं परम शान्ति की प्रत्यक्षानुभूति के निमित्त सत्यान्वेषी जिज्ञासुओं का कर्तव्य है कि वे सद्गुरु-शरणागत होकर, विहंगम योग की क्रियात्मक साधना के द्वारा इस शास्त्रीय रहस्य को प्राप्त करें और जीवनकाल में ही परमप्रभु की उपलब्धि के द्वारा अपने को कृतकृत्य करें।

भूमण्डल से परिचय करि के पर्वत धौल लखावै

नित्य अनादि सद्गुरुप्रणीत विहंगम योग की साधना के क्रम में विहंगम योग के साधक को प्रकृति-मण्डल का पूर्णज्ञान हो जाता है। वह प्रत्यक्ष देखता है कि उसकी इन्द्रियाँ, अन्तःकरण उसके प्राणादि कैसे और कहाँ-कहाँ कार्य कर रहे हैं? प्रकृति का विस्तार भी असीम, अनन्त है। समाधि-अवस्था प्राप्त विहंगम योगी को प्रकृति के सूक्ष्मतम रहस्य का ज्ञान स्वतः हो जाता

है। वह प्रकृति के सूक्ष्मतम अंश परमाणुओं को एक विशेष मण्डल में, अक्षर-भूमि में प्रत्यक्ष देखता है। परमाणुओं से ही सारे प्राकृतिक पदार्थ निर्मित हैं। परमाणुओं का प्रत्यक्ष ज्ञान आत्मचेतना, सुरति से हो जाने के परिणामस्वरूप विहंगम योगी प्रकृति-मण्डल में विद्यमान सारे प्राकृतिक तत्त्वों का ज्ञाता हो जाता है। यही नहीं, वह उन सारे तत्त्वों पर अपना अधिकार प्राप्त कर लेता है। ऐसे विहंगम योगी संकल्पमात्र से प्राकृतिक जगत्, संसार में अद्भुत कार्य कर सकते हैं और संसार के निवासियों को आश्चर्यचकित कर सकते हैं। परमाणु विज्ञान का वेत्ता विहंगम योगी के अतिरिक्त कोई भी अन्य प्राकृतिक योगी नहीं होता। राजयोग, हठयोग, मन्त्रयोग, लययोग, चाँचरी, भूचरी, अगोचरी, उन्मुनि, खेचरी, तारक योग, निष्पन्द योग एवं इस प्रकार के अन्य विविध योगों का अनुष्ठान करने वाला योगी परमाणु-प्रक्रिया का पूर्णवेत्ता नहीं होता। उसका प्रकृति-सम्बन्धी ज्ञान सीमित रहता है। प्रकृति के एक-एक रहस्य को ज्ञात करने के लिए उसे आजीवन एक-एक प्राकृतिक योग-साधना का दृढ़ अनुष्ठान करना होता है। जबकि विहंगम योगी को इसके लिए विहंगम योग के अतिरिक्त अन्य कोई योग-साधन करना नहीं पड़ता। दरअसल विहंगम योगी के अतिरिक्त अन्य किसी भी योग का साधक आत्मतत्त्व का साक्षात्कार नहीं कर सकता, क्योंकि उनका ज्ञान प्रकृति-मण्डल, पिण्ड-ब्रह्माण्ड तक ही सीमित रहता है। प्रकृतिपार पिण्ड-ब्रह्माण्ड से परे स्थित

Scanned with CamScanner

अक्षर-मण्डल की झलक तक उनको प्राप्त नहीं होती। अतः उनका मन-प्राण उनके साथ लगा रहता है। आत्मा के ऊपर से ये दोनों आवरण अनावृत नहीं होते अर्थात् प्राकृतिक योगियों की आत्मा पर घिरे रहते हैं। इस स्थिति में प्राकृतिक योगी आत्मा के शुद्ध स्वरूप को कैसे देख सकता है? उसे आत्मचेतना, सुरति जो आत्मा से निकलने वाली चेतन किरण है, नहीं दीख पड़ती। तब किस प्रकार वह परमात्मा को देख अथवा साक्षात्कार कर सकता है? क्योंकि परमात्मा सबसे सूक्ष्म, बारीक, चेतन तत्त्व है। उसकी प्रत्यक्षानुभूति के निमित्त परमात्मा जैसा ही सूक्ष्म, बारीक चेतनकरण होना चाहिए और वह आत्मचेतना, सुरति तथा निरति ही है। निरति-सुरति से भिन्न कोई अन्य पदार्थ नहीं है। सुरति ही आगे चलकर, चेतन एकांदश द्वार में निरति अर्थात् अधिक सूक्ष्म होकर प्रविष्ट हो जाती है। इस रहस्य को विहंगम योगी के अतिरिक्त अन्य कोई भी योग-साधक नहीं जान सकता। इसके लिए सद्गुरु-शरण में रहकर चिरकाल-पर्यन्त साधना करनी पड़ेगी, तब सद्गुरु की कृपा से यह स्थिति प्राप्त होगी। इसके लिए विहंगम योगाभ्यास से भिन्न अन्य कोई भी योग-साधन नहीं है, न हो सकता है, क्योंकि विहंगम योग ही एकमात्र साधन है, अन्य सभी योग-साधन प्राकृतिक साधन हैं। पिण्ड-ब्रह्माण्ड के अन्तर्गत होने के कारण प्रकृति-मण्डल के साधन अर्थात् योग है।

यहाँ पर 'भूमण्डल से परिचय' उसी प्रकृति-मण्डल के

Scanned with CamScanner

ज्ञानानुभव के लिए आया है। भूमण्डल अन्य कुछ नहीं, प्रत्युत प्रकृति-मण्डल ही है। विहंगम योगी को योग-साधना के क्रम में ही भूमण्डल का परिचय अर्थात् प्रकृति-मण्डल का पूर्णज्ञान हो जाता है, क्योंकि विहंगम योग की प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय कोटि की साधना प्रकृति के अन्तर्गत की ही साधना है। चतुर्थ एवं पंचम कोटि की साधना प्रकृतिपार चेतन-मण्डल की साधना है। चेतन साधन को करने वाले विहंगम योगी को सर्व चेतन रहस्य ज्ञात हो जाते हैं, जो अनन्त अनन्त हैं। 'पर्वत धौल' का उदाहरण देकर साहेब प्रकृति-मण्डल के परे ऊर्ध्व चेतन-मण्डल का संकेत करते हैं, जो श्वेत पर्वत की तरह अद्वितीय, श्वेतप्रकाशयुक्त दिव्य अक्षर एवं परम अक्षर के मण्डल हैं, जो एक अन्य से जुड़े हैं। चेतन तत्त्व को समझाने के निमित्त ही यहाँ साहेब ने प्राकृतिक श्वेत पर्वत की उपमा देकर अर्थात् रूपक प्रस्तुत कर उस दिव्य चेतन महामण्डल, परमप्रभु के धाम को रूपायित किया है। अतः सन्तजन अर्थात् नित्य अनादि, स्वयंसिद्ध, अभ्याससिद्ध तथा परम्परा सद्गुरु ही अपने शरणागत भक्त-शिष्य-साधकों का प्रकृति-मण्डल का सम्यक् ज्ञान कराते हुए प्रकृति-मण्डल के ऊर्ध्व स्थित अद्भुत श्वेत चेतन प्रकाश से परिपूर्ण श्वेत पर्वत-सदृश अचल स्थित परमात्मा के दिव्य चेतन मण्डल की भी प्राप्ति कराकर, उन्हें जीवन्मुक्त कर देते हैं। इन चार प्रकार के सद्गुरुओं के अतिरिक्त, जो संसार में एक कालखण्ड में एक ही प्रकट होते हैं, अन्य कोई भी तथाकथित गुरु, सद्गुरु,

Scanned with CamScanner

जगद्गुरु, स्वयंभू भगवान्, दण्डी, त्रिदण्डी, साधु-संन्यासी, योगी-फकीर इन दोनों तत्त्वों प्राकृतिक एवं चेतन को कदापि किसी भी अपने भक्त-शिष्य, साधकों को प्राप्त नहीं करा सकते, क्योंकि इसका ज्ञान, इसकी साक्षात् अनुभूति उनको स्वयं ही नहीं होती, तब कैसे वे अन्य किसी को इन तत्त्वों का अनुभव करा सकेंगे?

अतः अध्यात्म-पिपासु, अनुरागी, प्रभु-विरही, जिज्ञासु, पूर्ण सद्गुरु की खोज करें, क्योंकि आज तो सद्गुरुओं की संख्या अपार हो चली है। रोज एक-न-एक सद्गुरु प्रकट ही हो रहे हैं। उनमें से ही कोई एक पूर्ण समर्थ ब्रह्मनिष्ठ आप्त सद्गुरु होता है, उनको ही पहिचानें, उसकी ही खोज करें, उसकी ही शरण में जाकर विहंगम योग के इस महान् वैज्ञानिक साधन का अभ्यास कर सारे जड़-चेतन रहस्यों का उद्घाटन कर विश्व में सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक बनें।

Scanned with CamScanner

द्वादस कोस साहिब का डेरा तहाँ सुरत ठहरावै

साहिब अर्थात् परमपुरुष परमात्मा, सर्वव्यापक, सबसे सूक्ष्म, बारीक, चेतन, अद्वितीय सत्ता हैं। वह सम्पूर्ण सृष्टि के सभी जड़-चेतन पदार्थों में परिपूर्ण ओत-प्रोत व्याप्त हैं। वह प्रभु सर्वोपरि उपास्य देव हैं, वही सारी सृष्टि के कर्ता, धर्ता, भर्ता, नियामक, न्यायकर्ता, कर्मफल-प्रदाता, सच्चिदानन्द, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान महाप्रभु हैं। सृष्टि के बाहर भी ऊर्ध्व चेतन प्रदेश में अमृत, आनन्द, शान्तिस्वरूप से अपने शुद्ध चेतन स्वरूप से एक रहस्यपूर्ण माप की सीमा के अन्दर विद्यमान हैं। विहंगम योग की साधना सद्गुरु से प्राप्त कर चिरकाल तक करने से उसी मंडल में परम पुरुष का साक्षात् दर्शन होता है। उन परमात्मा का शुद्ध चेतन स्वरूप आत्मचेतना, सुरति के द्वारा प्रत्यक्ष दीख पड़ती है। परमपुरुष से सोमरस का प्रवाह निरन्तर आत्मा के अन्दर होता रहता है, जिसे पीकर आत्मा का त्रयताप शान्त हो जाता है। वह आप्तकाम हो जाता है, क्योंकि उस दिव्य आनन्द की तुलना में अन्य सभी सांसारिक सुख नगण्य, तुच्छ हैं। इसी परम चेतन-मण्डल को विराजधाम, समाधि-मण्डल,

Scanned with CamScanner

अमरलोक, साकेत आदि नामों से अभिहित किया गया है। परमात्मा के उस चेतन-मंडल में प्रकृति और प्रकृति-निर्मित कोई भी जड़ तत्त्व नहीं है। वहाँ न सूर्य है, न चन्द्र है, न तारे ही हैं, न धरती, न आकाश, न वायु और न अग्नि ही है। वहाँ सिर्फ वही वह है, अन्य कुछ भी नहीं है।

इस सर्वोपास्य परमप्रभु का साक्षात्कार सद्गुरु-विधान से आत्मचेतना, सुरति से सम्भव है, क्योंकि परमपुरुष चेतन है और आत्मचेतना सुरति भी चेतन है। इन्द्रिय, मन, प्राण, वाणी, वहाँ तक नहीं पहुँच सकतीं। इसलिए सद्गुरुदेव अपने शिष्य साधक की चेतना वहीं पर विराजधाम, परमात्मा में दृढ़ स्थिर कर देते हैं, तभी आत्मा को परमात्मा का असीम आनन्द उपलब्ध होता है। सद्गुरुदेव के अतिरिक्त यह महान् कार्य किसी भी मत-सम्प्रदाय के गुरु, आचार्य से कदापि नहीं हो सकता। अतः मानवमात्र का यह परम कर्तव्य है कि वह सर्व अभिमान त्यागकर सद्गुरु-शरण में रहकर विहंगम योग की साधना के द्वारा इस महान् अवस्था को प्राप्त करे।

Scanned with CamScanner

वाको रंग रूप नहिं रेखा कौन पुरुष गुन गावै

परमपुरुष, परमात्मा, सारशब्द, सत्यनाम, निःअक्षर, निःतत्त्व, परम अक्षर, का कोई प्राकृतिक रूप-रंग अथवा रेखा नहीं है। वह सर्वव्यापक विभु चेतन सत्ता है। चेतन सत्ता का कोई अवयव अंग-प्रत्यंग नहीं होता। उसका अपना एक पृथक् ही चेतन रंग होता है। परमात्मा निराकार नहीं है। वह चेतन आकार वाला है, तभी समाधि-अवस्था में योगिजन उसे प्रत्यक्ष देखते हैं। उसका स्पर्श भी अपनी आत्मचेतना सुरति से करते हैं। परमात्मा अमृत है। अमृत का पान भी सुरति की जिह्वा से विहंगम योगी करते हैं। जड़ पदार्थ सर्वव्यापक नहीं हो सकता। चेतन ही सर्वव्यापक, सबसे सूक्ष्म, बारीक होता है, वही सभी जड़-चेतन में समा सकता है। परमात्मा निर्गुण भी नहीं है। वह प्रकृति के सत्, रज, तम– इन तीन गुणों से रहित है, परन्तु अपने अनन्त गुणों से गुणवान अर्थात् सगुण है। बहुत से उपासक परमात्मा को सगुण, साकार समझकर, परमात्मा की मूर्त्ति बनाकर उसकी पूजा करते हैं। दरअसल परमात्मा चेतन है। अतः उसका कोई ठोस आकार नहीं होता।

Scanned with CamScanner

उसकी प्रतिमा नहीं हो सकती। वेद कहता है-- 'न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः' परमात्मा का गुणगान वाणी द्वारा नहीं किया जा सकता। वह अनिर्वचनीय, अद्भुत, अलौकिक सत्ता है। उसे विहंगम योग की वैज्ञानिक पद्धति से प्रत्यक्ष देखा जाता है।

चूँकि परमपुरुष चेतन है। अतः वह जड़ नेत्र-गोलक से देखा नहीं जा सकता। उसके कार्य को हम देख सकते हैं, देखते हैं। इस अनन्त सृष्टि का रचयिता परमात्मा है। इस सृष्टि को हम देखते हैं। इसमें स्थित अनन्त ग्रह-मालाओं, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, पर्वत, महासागर, विशाल भूखण्ड को हम देखते हैं। अनेक प्रकार के पक्षी, पशु, मनुष्य को हम देखते हैं। हवा, पानी, आकाश, अग्नि इनका अनुभव हम करते हैं। विद्युत् एक जड़ प्राकृतिक शक्ति है, जब यह ताँबे अथवा जस्ते के तार से परिचालित होती है, तो उसे हम नंगी आँखों से देख नहीं सकते। उसके द्वारा होने वाले विविध कार्यों को हम देखते हैं। पंखे चलते हैं, फैक्टरियाँ चलती हैं, वातानुकूलित यन्त्र चालित रहते हैं, फ्रीज अपना कार्य करता रहता है, तब हम समझते हैं, तारों से विद्युत्-प्रवाह हो रहा है। जिस क्षण यह प्रवाह बन्द हो जाता है, फैक्टरियाँ, पंखे, वातानुकूलक, फ्रीज आदि बन्द हो जाते हैं, बल्ब प्रकाशहीन हो जाते हैं। उसी तरह सृष्टि और सृष्टि के कार्य को देखकर, हम परमात्मा

Scanned with CamScanner

के अस्तित्व का अनुमान करते हैं। परन्तु परमात्मा का हमारे भारत के ऋषि-महर्षि, सन्तों ने साक्षात्कार बतलाया है। आमने-सामने देखना बतलाया है। आत्मा-परमात्मा कल्पना के विषय नहीं हैं। टेबुल टॉक के विषय नहीं हैं, जो इन दिनों एक फैशन ही हो गया है। दस-पाँच प्रबुद्ध बुद्धिजीवी जब कहीं एकत्र होते हैं, तब आत्मा-परमात्मा सम्बन्धी बातें करते हैं। अपनी-अपनी कल्पना के आधार पर तर्क-कुतर्क करते हैं और किसी निर्णय पर नहीं पहुँचकर, अपने-अपने अनुमान के आधार पर परमात्मा के होने अथवा न होने के विश्वास पर दृढ़ रहते हैं। दरअसल ऐसा करना मात्र बकवास है, इसमें कोई तथ्य नहीं है, कोई लाभ इससे नहीं है। किसी चीज को बिना देखे, बिना प्राप्त किये का वर्णन करना, उसके सम्बन्ध में अनुमान, कल्पना करना, मात्र अपने समय और शक्ति की बरबादी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

अतः जिस व्यक्ति ने परमात्मा का साक्षात्कार नहीं किया, विहंगम योग समाधि में उसे प्रत्यक्ष देखा नहीं, तो वह उसके सम्बन्ध में क्या बातें करेगा? उसका क्या वर्णन करेगा? उसके गुणों का क्या गायन करेगा? अतः उस परमानन्दस्वरूप, प्राणों के प्राण, जीवन-धन, परमात्मा का साक्षात् करना एक बात है और उसके गुणों का वाणी द्वारा गायन करना, बखान करना, उसकी चर्चा करना दूसरी बात है। अतः यहाँ साहेब कहते हैं कि उस परमात्मा का कोई भौतिक रूप, रंग, रेखा नहीं है, जिसे नंगी आँखों से देखा

Scanned with CamScanner

जाय और उसके गुणों की चर्चा की जाय। उसके गुणों का वर्णन सही ढंग से कोई कर भी नहीं कर सकता, वह तो वाणी द्वारा व्यक्त नहीं हो सकता, क्योंकि वाणी द्वारा अदृश्य है, अप्राप्य है। उसका प्रत्यक्ष अनुभव तो विहंगम योग समाधि में सद्गुरु-कृपा से किया जा सकता है और ऐसा दिव्य अनुभव करने वाला, उसके असीम, अनन्त गुणों का अनुभव कर स्वयं चकित रह जाता है। वह भूल जाता है अपने-आप के अस्तित्व को। वह खो जाता है, परमात्मा के दिव्य आनन्द-सागर की गहराई में। तब उसका गुणगान कौन और कैसे करेगा? वह तो तू-तू करता रहता है, तू ही हो जाता है। द्रष्टादृश्य में एकात्मकता हो जाती है। देखने वाला अपना सुध-बुध खो चुकता है, तब वह उस विभु परमानन्दमय सत्ता का गुणगान कैसे करेगा? इसलिए साहेब कहते हैं– 'कौन पुरुष गुण गावैं'। अतः विश्व के मानवमात्र को यह दिव्य सन्देश है कि सद्गुरु द्वारा उपदिष्ट विहंगम योग की दीक्षा ग्रहण कर, परमात्मा का प्रत्यक्ष साक्षात्कार करें और साहेब की इस अमृतवाणी की अनुभूति योग-समाधि में करके, अपने जीवन को मंगलमय बनावें। इस दुःखमय जगत् से हटकर, चेतन आनन्दमय जगत् में विचरण करें।

Scanned with CamScanner

कहैं कबीर सुनो भाई साधो जो यह पद लखि आवै

साहेब कबीर नित्य अनादि सद्गुरु हैं, जो कलि में कबीर के नाम से जगत् में प्रकट होकर, अपनी अमृतवाणी के द्वारा प्रभु का दिव्य सन्देश जगजीवों को देते रहे हैं। वे विहंगम योग के साधकों, अध्यात्म-पिपासु, प्रभु-विरह में संतप्त जिज्ञासुओं को यत्र-तत्र सर्वत्र सम्बोधित करते रहते हैं, उन्हें प्रभु-प्राप्ति का मार्ग दिखलाते रहते हैं, क्योंकि वह अत्यन्त करुणागार हैं। उनसे मानवमात्र का भयार्त जीवन-यापन करना देखा नहीं जाता, सहन नहीं होता। अतः अपने अमृत-उपदेश से अज्ञानान्धकार में निमग्न, सोये हुए लोगों को जगाते फिरते हैं। प्रभु की ओर उनका ध्यान आकर्षित करते रहते हैं।

विहंगम योग की अन्तिम भूमि जब सद्गुरु-शरण में चिरकाल-पर्यन्त योगाभ्यास करने के पश्चात् प्राप्त हो जाती है। जब समाधि-अवस्था में सारे तत्त्वों का निर्भ्रान्त ज्ञान उपलब्ध हो जाता है, जब समाधिस्थ योगी इस महान् उपलब्धि को प्रत्यक्ष देखता है, तब तो उसका कहना ही क्या? उसके जीवन के

सारे मनारथ पूर्ण हो जाते हैं। अब कोई भी ऐसा सांसारिक सुख, कोई भी प्रलोभन उसे अपनी ओर आकर्षित नहीं करता। अब प्रभु के परमानन्द, अमृत स्वरूप में डूबकर धन्य-धन्य हो जाता है। यह स्थिति मानव-जीवन की सार्थकता है, सर्वोपरि उपलब्धि है, जिसका वर्णन चाहे जितना भी किया जाय, थोड़ा ही होगा।

अमरलोक में झुलै हिंडोला सतगुरु सबद सुनावै

विहंगम योग की साधना सद्‌गुरु-शरण में रहकर उनके आदेश-निर्देश का अक्षरशः पालन करते हुए, योगाभ्यास करने वाला, सद्‌गुरु-शिष्य परमात्मा के त्रिपाद ऊर्ध्व अमरलोक महाचेतन मंडल की अनुभूति अपने जीवनकाल में ही समाधि-अवस्था में करता है। उसी अमृत-प्रदेश में अपनी चेतना सुदृढ़ स्थिर रखने वाला इस प्रकार का समाधिस्थ योगी अमरलोक के आनन्दातिरेक की अनुभूति में आनन्द में मस्त होकर झूला झूलने लगता

है। धरती पर श्रावण मास में वृक्षों की झुरमुट में झूला टाँगकर, उस पर चढ़कर युवक-युवतियाँ, बच्चे गीत गायन करते हुए, झूले झूलते रहते हैं। उस स्थिति में वे संसार की सारी चिन्ताओं, दुःख की अनुभूति को पूर्णतः भूल जाते हैं। जब सांसारिक झूले पर झूलने से इस प्रकार की सुखानुभूति होती है, तब अमरलोक में अपनी चेतना को सतत स्थापित करने वाले विहंगम योगी के आनन्द का कहना ही क्या है? वह तो जन्म-जन्मान्तर के सारे कष्ट-परितापों, सारे बन्धनों, चिन्ताओं से मुक्त होकर शाश्वत आनन्द के पलने पर झूला झूलता रहता है। अब उसके सामने सद्गुरु-उपदिष्ट शब्द, सारशब्द के परमानन्दस्वरूप के अतिरिक्त और कोई भी अन्य पदार्थ नहीं रहता। यहाँ तक कि आनन्दानुभूति की प्रगाढ़ता में वह अपने आपको, अपनी निजी आत्मानुभूति को भी विस्मृत कर डालता है। लौह-अग्निवत् आत्मा की स्थिति परमात्ममय हो जाती है और जीवन में शेष अन्य कुछ भी प्राप्य नहीं रह जाता है।

यह सर्वोच्च स्थिति अन्य किसी भी योग, जप-तप, पूजा-पाठ, तीर्थ-व्रत, यज्ञ-दान, तंत्र-मंत्र के अनुष्ठान से कदापि सम्भव नहीं है, क्योंकि वे सबके सब प्राकृतिक धरातल पर किये जाते हैं और विहंगम योग ही एकमात्र सृष्टि की प्राचीनतम वैज्ञानिक चेतन साधना है, जिसके द्वारा चेतन दिव्य अमरलोक, त्रिपाद ऊर्ध्व अमृत पुरुष को साधक सद्गुरु-कृपा से प्राप्त करता है।

Scanned with CamScanner

अतएव संसार के सारे आनन्द-इच्छुक मानव को यह दिव्य सन्देश साहेब कबीर दे रहे हैं कि सद्गुरु द्वारा बतलाये गये चेतन विहंगम मार्ग का अनुसरण कर आप सभी परमपुरुष के आनन्दलोक को प्राप्त कर अपने मानव-जीवन को कृतकृत्य करें।

उपसंहार

संसार में कतिपय ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो पूरे विश्व के प्राणियों के हित की बात सोचते हैं। अपने मन-वच-काया द्वारा उनको उपकृत करते रहते हैं, परन्तु इस प्रकार के महापुरुष इने-गिने ही होते हैं। संसार के अधिकांश व्यक्ति स्वार्थपरायण होते हैं। वे सोचते हैं, अपने हित के सम्बन्ध में, बोलते हैं, अपने हित का ध्यान रखते हैं और करते वही हैं जिससे उनका स्वार्थलाभ हो। यही नहीं कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं, जो अकारण अन्य लोगों का अहित सोचते हैं। अहित-सम्बन्धी बातें बोलते हैं और अहित करते भी हैं। आज इस प्रकार के व्यक्तियों की कमी नहीं है। इसलिए जहाँ देखिए, समाज,

देश तथा पूरे विश्व में दुःख है, अशान्ति है। महान् पुरुष मात्र अपने लिए जीते नहीं हैं। उनके संसार में रहने से संसार के प्राणियों को सहज ही असीम लाभ मिलता है। इस प्रकार के ऋषि-महर्षि, सन्त, सज्जन पुरुष विश्व में समय-समय से होते आये हैं। उनका चिन्तन-मनन 'बहुजन हिताय' नहीं होता, अपितु 'सर्वजन हिताय' होता है। उनका कथन भी सर्वजन कल्याणार्थ होता है, उनके कार्य भी विश्व के प्राणिमात्र को सुख-शान्ति के निमित्त होते हैं।

सद्गुरु एक इसी श्रेणी के महापुरुष होते हैं, जो समय-समय पर जगत् के मानवमात्र को कष्टों से विमुक्त करने के लिए संसार में अवतरित होते हैं। सद्गुरु के समान अन्य कोई भी व्यक्ति, चाहे वह किसी भी क्षेत्र का सर्वश्रेष्ठ पुरुष क्यों न हो, सम्पूर्ण विश्व का कल्याण नहीं कर सकता। वह सोचता भले ही है-- सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के सम्बन्ध में, परन्तु उसकी शक्ति परिमित होती है और परिमितसम्पन्न व्यक्ति समाज, देश और सम्पूर्ण विश्व का कल्याण कितना कर सकता है? परन्तु सद्गुरु की शक्ति अपरिमित, सार्वभौम होती है। वे परमात्मा की अनन्त शक्ति को धारण करने वाले सम्पूर्ण विश्व के अद्वितीय व्यक्तित्व होते हैं। साहेब कबीर भी सद्गुरु रहे हैं। वह तो स्वयं नित्य अनादि सद्गुरु ही हैं, जो चारों युगों में 'अविगत' से आकर मानवरूप में प्रकट होते हैं और अव्यक्त रूप से

Scanned with CamScanner

भी सदा सर्वत्र विद्यमान रहते हैं। उनको तत्कालीन विद्वान्, पंडित, मुल्लाओं एवं अन्य जनसामान्य ने पहचाना ही नहीं। वे पहचानते भी कैसे? कहा गया है--

हीरा परखे जौहरी, शब्द को परखे साध।
जिन साधन को परखिया, तिनंकी मती अगाध।।

हीरा एक बहुमूल्य पत्थर है, लेकिन उनको सर्वसाधारण पहचानते नहीं हैं। जब उसकी कटाई-छिलाई कर दी जाती है, तब उसमें विशेष चमक-दमक आ जाती है। वह आकर्षक भी हो जाता है, फिर भी उसे सर्वसाधारण व्यक्ति नहीं पहचान सकते, क्योंकि काँच में भी उसी प्रकार की चमक-दमक दिख पड़ती है। नकली कृत्रिम हीरे में भी उससे बढ़कर प्रकाश होता है, पर असली और नकली हीरे के सूक्ष्म अन्तर को कोई-कोई अनुभवी जौहरी ही पहचान सकता है, सर्वसाधारण नहीं। शब्द अर्थात् सारशब्द, सत्यनाम, परमप्रभु को साधु पहचानते और जानते हैं, जिन्होंने विहंगम योग की साधना के द्वारा 'शब्द' को समाधि-अवस्था में प्रत्यक्ष देखा है। ऐसे साधु अर्थात् शब्द-पारखी महापुरुष को जो व्यक्ति पहचान ले, उसकी बुद्धि भी अगाध है। उसकी पहचानने की दृष्टि पैनी है और उस सद्गुरु को पहचान लेना, जो नित्य अनादि हैं, जो अपनी स्वाती, ज्ञानधारा प्रदान कर अनेक साधु, महात्मा, योगी तथा स्वयंसिद्ध, अभ्याससिद्ध और परम्परा सद्गुरु का निर्माण कर

देते हैं, कितना कठिन है? कितना दुस्तर है? उन्हें तो वे ही पहचान सकते हैं, जिनको वे अपना पहचान करा देते हैं। 'सोई जानई जेहिं देत जनाई। जानत तुमहिं तुमहिं होय जाई' इस स्थिति को प्राप्त कर लेता है।

साहेब कबीर काशी में प्रकट होकर जब अपना अमृत-उपदेश जनसामान्य के बीच बिना मोल के वितरित करने लगे, तो लोगों में खलबली मच गई। उनके वक्तव्य की ऊँचाई को समझ नहीं पाये और उनको अनपढ़ तक कह डाला। भला जिस सद्गुरु के शिष्य-दर-शिष्य प्राचीन वेदवेत्ता, ऋषि-महर्षि रह चुके हैं, जिनकी शिक्षा-दीक्षा प्राप्तकर जो मन्त्रद्रष्टा ऋषि, महर्षि बन गये, उनकी विद्या का थाह पाना, कोरे पुस्तकीय पाण्डित्य के आधार पर कर सकना क्या कभी सम्भव हो सकता है? आज भी साहेब की अमृतवाणी जो उनके मुखारविन्द से सम्पूर्ण विश्व की मानवता के कल्याण हेतु निःसृत हुई हैं, उनके सही अर्थ तक पहुँचना, आज के विद्वत्समाज के लिए असम्भव ही है, जबतक वे साहेब द्वारा उपदिष्ट ब्रह्मविद्या विहंगम योग की साधना का अभ्यास अपने जीवन में न कर लें। साधना के पश्चात् ही साक्षात्कार, उपलब्धि होने पर साहेब के महत्त्व को कोई-कोई कुछ समझ सकता है। अन्यथा कल्पना के पंखों पर उड़ान भरने वाले व्यक्ति जहाँ पहुँचना है, वहाँ न पहुँचकर और के तौर निर्णय देने में कोई संकोच नहीं करते। कल्पना,

अटकलबाजी और प्रत्यक्ष अनुभूति में जमीन-आसमान का अन्तर है। अतः सत्य ग्रहण के इच्छुक संसार के सभी लोग साहेब कबीर की अमृतवाणी का रहस्य समझें और वर्तमान सद्गुरु की शरण में रहकर विहंगम योग का साधन करें, जिसका संकेत साहेब की इन वाणी में इस प्रकार किया गया है—

"मारग विहंग बतावैं सन्तजन"

Scanned with CamScanner

अ

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।।

सन्त समाज के नियम

1. मानव-जीवन का मुख्य उद्देश्य सच्चिदानन्द महाप्रभु की प्राप्ति, त्रिताप दुःख की निवृत्ति तथा परमानन्द की उपलब्धि करना है, अन्य सर्व कर्त्तव्य गौण हैं।

2. श्री सच्चिदानन्द अद्भुत निःशब्दस्वरूप, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, असीम, अमृत, दयालु, सत्पुरुष, महाप्रभु की ही अनन्य भक्ति करनी चाहिए, अन्य की नहीं।

3. ब्रह्मविद्या सहज योग समाधि द्वारा इसी शरीर से परमपुरुष परमात्मा की प्राप्ति, जीवन्मुक्ति होती है, प्राकृतिक करणों अथवा अन्य साधनों से नहीं।

4. प्रभु का सच्चा प्रेमी, विरही, अनुरागी श्री सद्गुरुदेव जी का अनन्य शरणागत दास, अधीन, आस्तिक्य भाव, सत्य, शील, सन्तोष, दया, क्षमा, शम, दम, विवेक, वैराग्य आदि सद्गुण सम्पन्न जिज्ञासु उपदेश के अधिकारी हैं।

5. भूमण्डल में ब्रह्मविद्या योगमार्ग का प्रचार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, किसी मत या समप्रदाय विशेष का प्रचार नहीं।

Scanned with CamScanner

6. बीजक निज भाष्य, चतुर्वेदीय ब्रह्मविद्या निजभाष्य और निजरचित स्वर्वेद, इस सन्त समाज के ये तीन मुख्य प्रधान ग्रन्थ हैं, इन सद्ग्रन्थों को पढ़ना-पढ़ाना और इनका प्रचार करना सबका धर्म है।

7. श्री सद्गुरुदेव जी तथा आश्रम के शिष्य-सन्तों के सङ्ग एवं सेवा, सत्संग, उपदेश द्वारा क्षर-अक्षर, निःअक्षर का बोध प्राप्त कर नियमपूर्वक प्रतिदिन योगाभ्यास सबको करना चाहिए।

8. इस भक्ति-मुक्ति प्रदायी सन्त-समाज में सर्व धर्म, सर्व मत, सर्व सम्प्रदाय, सर्व वर्णाश्रम, सर्व जाति तथा सर्व देश के मनुष्य अधिकारी बन सम्मिलित हो सकते हैं।

9. यथायोग्य प्रेम से सर्व में वरत कर, आध्यात्मिक उन्नति कर विश्व में सच्ची सुख-शान्ति की स्थापना करनी चाहिए।

10. अपने सुख में सुख और अपनी उन्नति में उन्नति समझ, सन्तुष्ट न होकर संसार के सुख में ही अपना सुख और संसार की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी और माननी चाहिए।

11. आप्त ब्रह्मविद्या योगाचार्य श्री सद्गुरुदेव जी के इन निर्भ्रान्त, अटल नियमों के पालन करने में सभी परतन्त्र हैं, कोई किसी नियम का उल्लंघन नहीं कर सकता।

12. आस्तिक्य भाव से श्री सद्गुरुदेव जी के पुनीत श्री चरण-कमलों में आत्मसमर्पण कर, अनन्य शरण दास होकर, सेवा, सुमिरन, भजन करने से जीव का कल्याण होता है।

♥

Scanned with CamScanner

संस्थान के सद्ग्रन्थों की सूची

★ श्री सदाफलदेव जी महाराज के सद्ग्रन्थ

१. स्वर्वेद (मूल)
२. बीजक-भाष्य
३. ऋग्वेदीय ब्रह्मविद्या-भाष्य
४. यजुर्वेदीय ब्रह्मविद्या-भाष्य
५. सामवेदीय ब्रह्मविद्या-भाष्य
६. अथर्ववेदीय ब्रह्मविद्या-भाष्य
७. पातञ्जल योग दर्शन-भाष्य
८. स्त्रीमोह-तिमिर भास्कर
९. विहंगम योग प्रकाश
१०. विश्व राज्य विधान
११. संकट-मोचन (मूल)
१२. बाल-शिक्षा भाग-१
१३. बाल-शिक्षा भाग-२
१४. आश्रम नियमावली
१५. अष्टाङ्ग-योग दर्पण
१६. ज्ञान गुदड़ी-भाष्य
१७. योग तत्त्व दर्पण
१८. सदाफल-नीति
१९. सहजोपनिषद्
२०. विज्ञान-दर्शन
२१. योग-चन्द्रिका

Scanned with CamScanner

२२. आदर्श शिष्य
२३. शब्द-प्रकाश
२४. भारत-भ्रमण
२५. अध्यात्म-योग
२६. विहंगम-योग
२७. योग-रहस्य
२८. सद्गुरु-जीवन
२९. वनिता-शिक्षा
३०. वेदान्त दर्शन-भाष्य (ब्रह्मसूत्र)
३१. योग-शिखा
३२. शुक्र-प्रभा
३३. मधुमति
३४. भेदसार
३५. वन्दना

★ ***श्री धर्मचन्द्रदेव जी महाराज के सद्ग्रन्थ :***

३६. स्वर्वेद-भाष्य भाग-१
३७. स्वर्वेद-भाष्य भाग-२
३८. ब्रह्मविद्या और मत-सम्प्रदाय
३९. सद्गुरु दिव्य चरितावली
४०. कबीर और ब्रह्मविद्या
४१. सद्गुरुदेव कौन थे?
४२. दिव्य जीवन कथा
४३. प्रश्नोत्तरी
४४. अमृतवाणी
४५. बोधामृत

Scanned with CamScanner

४६. ज्ञानामृत
४७. केनोपनिषद्-भाष्य

★ ***श्री स्वतंत्रदेव जी महाराज के सद्ग्रन्थ :***

४८. स्वर्वेद-भाष्य (उत्तरार्द्ध)
४९. श्रीमद्भगवद्गीता-भाष्य
५०. शब्द प्रकाश-भाष्य
५१. संकट मोचन-भाष्य
५२. वन्दना-भाष्य
५३. मन न रँगाय, रँगाय जोगी कपड़ा
५४. सतगुरु चीन्हों रे भाई
५५. ई मन बनिया बान न छोड़ें
५६. अवधू अमल करै सो गावै
५७. मारग विहंग बतावैं संत जन
५८. साधो भजन भेद है न्यारा

★ ***संस्थान के अन्य आध्यात्मिक साहित्य :***

५९. विहंगम योग : एक परिचय
६०. विहंगम योग : एक झलक
६१. आम्र सदाफल आपै विन्दु
६२. विहंगम योग प्रदीपिका
६३. सद्गुरु सदाफल-वाणी (भाग-१)
६४. सद्गुरु सदाफल-वाणी (भाग-२)
६५. सद्गुरु सदाफल वचनामृत
६६. पर्यावरण प्रदूषण एवं योग

Scanned with CamScanner

६७. स्वर्वेद-भाष्य भाग-२ (मराठी संस्करण)
६८. स्वामी जी के साथ एक वर्ष (संस्मरणात्मक)
६९. श्रीमद्भगवद्गीता (पद्यानुवाद)
७०. विहंगम योग : प्राथमिक सोपान
७१. दिव्य जीवन कथा (गुजराती)
७२. सद्गुरु की दिव्य वाणी
७३. दर्शन शास्त्र एवं मानव-धर्म
७४. सद्गुरु और ब्रह्मविद्या
७५. गीता प्रवचन-माला
७६. आध्यात्मिक निबन्ध भाग-१
७७. आध्यात्मिक निबन्ध भाग-२
७८. अमृतं नाम भेजिरे
७९. आदि सन्त की वाणी भाग-१
८०. आदि सन्त की वाणी भाग-२
८१. आदि सन्त की वाणी भाग-३
८२. प्रथम परम्परा सद्गुरु का दिव्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व
८३. Sadguru Divya charitavali.
८४. Who Was Sadgurudeo?
८५. Divya Jiwan katha.
८६. Vigyan Darshan.
८७. Code of Conduct of the Ashram.
८८. Vihangam Yoga : The Science of Consciousness.
८९. The Introduction of Vihangam Yoga.
९०. Lectures On Vihangam Yoga.

Scanned with CamScanner

सत्यकाम! अ सत्यसंकल्प!!

- पिपिल, कपिल और विहंगम– इन तीनों मार्गों की चर्चा प्राचीन वाङ्मय में आती है।
- पिपिल कहते हैं चींटी को, जो किसी-न-किसी ठोस आधार से चलती है। प्राकृतिक सारे पूजा-पाठ, जप-तप, यज्ञ, तीर्थ, व्रत, दान आदि पिपिल मार्ग के अन्तर्गत आते हैं। ये सभी शुभ कर्म हैं। इनके शुभ फल को भोगने के लिए जीव को पुनः शरीर धारण करना पड़ता है। इनसे प्रभु की प्राप्ति नहीं होती।
- राजयोग, हठयोग, तन्त्रयोग, मन्त्रयोग, प्राणायाम आदि आधुनिक योग की प्रक्रिया कपिल मार्ग के अन्दर आती हैं। इससे भी प्राकृतिक लाभ होता है। इनमें कुछ से शारीरिक, कुछ से मानसिक, कुछ से बौद्धिक लाभ मिलता है, आत्मिक लाभ नहीं।
- विहंगम मार्ग को प्राचीन वाङ्मय में ब्रह्मविद्या, पराविद्या, मधुविद्या, सहज योग, शब्द-सुरति योग, देवयानपथ, अध्यात्मविद्या भी कहा गया है। जिसका उपदेश करने वाले सन्तजन, यानि नित्य अनादि, स्वयंसिद्ध, अभ्याससिद्ध और परम्परा सद्गुरु हैं। इनके अतिरिक्त अन्य कोई भी साधु, महात्मा, योगी, संन्यासी आदि नहीं तथा विहंगम योग के अतिरिक्त अन्य कोई भी योग, उपाय परमात्मा-प्राप्ति का साधन नहीं है।

Scanned with CamScanner